6. मौर्य वंश

चन्द्र गुप्त मौर्य (322BC–298BC)

- मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था।
- चाणक्य/ कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री था।
- मेगास्थनीज चन्द्रगुप्त मौय के दरबार में आया था।
- इंडिका की रचना मेगास्थनीज ने की थी।
- चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश के धनानंद को हराकर पाटलीपुत्र में मौर्य वंश की स्थापना की।
- चंद्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।
- चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म की शिक्षा भद्रबाहु से ली।
- सेल्युकस निकेटर ने चन्द्रगुप्त को चार प्रांप्त दिए:
  (1) काबुल
  (2) कांधार
  (3) हेरात
  (4) मकारान
- 305 ई॰ में चंद्रगुप्त ने सेल्युकस को हराया।
- चंद्रगुप्त की मृत्यु 298 ई॰पू॰ में श्रवणबेलगोला में उपवास के दौरान हुई।

बिन्दुसार (298 - 273 ई.पू.)

- चंद्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी बिन्दुसार हुआ। इसे **अमित्रघात** के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है शत्रुओं का नाश करने वाला।
- यूनानी लेखों में उसे अमित्रचेटस, वायुपूराण में मद्रसार तथा जैन ग्रंथों में सिहसेन कहा गया है।
- यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- स्ट्रैबो के अनुसार सीरियन नरेश एण्टियोकस ने बिन्दुसार के दरबार में डाइमेकस नामक राजदूत भेजा।

अशोक (269 - 232 ई.पू.)

- कलहण की राजतरंगिनी के अनुसार श्रीनगर की स्थापना अशोक द्वारा हुई।
- बिन्दुसार का उत्तराधिकारी अशोक हुआ।
- मास्की एवं गुर्जर अभिलेख में अशोक का नाम अशोक मिलता है।
- 261 ई॰पू॰ में अशोक ने कलिंग पर अधिकार किया।
- अशोक ने धम्म की परिभाषा राहुलोवाद सन्त से ली गयी है।
- भब्रु लघु शिलालेख में अशोक ने त्रिसंध (बुद्ध, धम्म एवं संघ) में विश्वास प्रकट किया है।
- भारत में सर्वप्रथम जनगणना अशोक द्वारा करायी गयी।
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष धर्म महामात्र की नियुक्ति की।
- अशोक के शिलालेखों में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक-अरमाइक लिपि का प्रयोग किया है।
- **अशोक के 14 शिलालेखों में वर्णित विषय–**

प्रथम	–	पशु बलि की निन्दा
द्वितीय	–	मनुष्य और पशु दोनों की चिकित्सा व्यवस्था
पांचवा	–	धर्म महामात्र की नियुक्ति
सातवां एवं आठवां	–	तीर्थ यात्राओं का उल्लेख
तेरहवां	–	कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक का हृदय परिवर्तन।

- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गुप्तचरो को 'गूढ़ पुरुष' कहा गया है।
- अशोक ने देवानाम और प्रियदर्शी की उपाधि धारण की।
- मौर्य शासन में दो तरह के गुप्तचर होते थे–

क. संस्था– एक ही स्थान पर कार्य करने वाले

ख. संचार– एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करने वाले।

- सांची का स्तूप (मध्य प्रदेश) अशोक ने बनवाया था।
  अशोक का सबसे बड़ा स्तम्भ सातवां है।
  अशोक : पुराणों में अशोक का नाम अशोक वर्धन है।
- उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु से अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।
- अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी था।
- नागार्जुनी का गुहा मंदिर अशोक ने बनवाया था।
- अशोक ने आजीविकों के लिए बराबर की पहाड़ियों में चार गुफाओं का निर्माण किया।
- भारत में शिलालेख का प्रचलन सर्वप्रथम अशोक ने किया।
- अशोक के शिलालेख में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक - अरमाइक लिपि का प्रयोग हुआ है।
- ब्राह्मी - बायीं से दायीं ओर

- खरोष्ठी – दायीं से बायीं ओर
- तेरहवें शिलालेख में कलिंग युद्ध का वर्णन है।
- कौशाम्बी अभिलेख को रानी का अभिलेख कहा जाता है।
- प्रयाग स्तम्भ लेख पहले कौशाम्बी में स्थित था। इसे अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित कराया।
- दिल्ली टोपरा स्तम्भ लेख फिरोजशाह तुगलक के द्वारा टोपरा से दिल्ली लाया गया।
- दिल्ली मेरठ स्तम्भ लेख फिरोजशाह तुगलक द्वारा मेरठ से दिल्ली लाया गया।
- अशोक के अभिलेख को पढ़ने में सफलता सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप को 1837 में मिली।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है। शार-ए-कुना (कांधार) का अभिलेख ग्रीक एवं आर्मेइक लिपि में है।

अशोक के उत्तराधिकारी–

कुणाल
–
दशरथ
–
सम्प्रति
–
शालिशूक
–
देववर्मन
–
शतधनुस
–
बृहद्रथ

[**नोट–** अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग द्वारा कर दी गयी।]

- मेगस्थनीज के अनुसार प्रशासन के लिए 6 समितिया थी जिनमें प्रत्येक में 5 सदस्य थे:

समिति	**कार्य**
(1) प्रथम	समिति उद्योग शिल्पों का निरिक्षण
(2) द्वितिय समिति	विदेशीयों की देखरेख
(3) तृतीय समिति	जन्म मरण का लेखाकरण
(4) चतुर्थ समिति	व्यापार/वाणिज्य
(5) पंचम समिति	निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरिक्षण
(6) छठी समिति	पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष

मौर्य काल के अधिकारी

रज्जुक – जनपदीय न्यायालय का न्यायाधीश। यह अधिकारी अशोक द्वारा नियुक्त किया गया।

प्रादेशिक – आधुनिक जिलाधिकारी के समान।

शुद्रो का प्रथम बार कृषि कार्यो में मौर्य काल मेंही लगाया गया था।

महामात्र – नगर प्रशासन का उच्च अधिकारी

युक्त – राजस्व अधिकारियों का सहायक

प्रतिवेदक – राजा को हर तरह की सूचना देने वाला।

समाहर्त्ता – राजस्व विभाग का प्रमुख अधिकारी।

वदेहक – व्यापारी एंव दुकानदार।

सन्निधाता – कोषाध्यक्ष।

दण्डपाल – पुलिस अधिकारी।

प्रदेष्टा – फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश।

व्यवहारिक – नगर का प्रमुख न्यायाधीश।

अन्तपाल – सीमावर्ती दुर्गो का रक्षक।

- राज्य के सप्तांग सिद्धान्त की सर्वप्रथम व्याख्या कौटिल्य ने की। ये हैं– राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड एवं मित्र।

  [**नोट–** याद करने का सूत्र– **आम जनता** ने **दुर्ग को** छोड़कर **राजा** के **मित्र** को **दंड** दिया।]
- अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में तीर्थ का उल्लेख मिलता है, इन्हें महामात्र भी कहा जाता था। इनकी संख्या अठारह थी।

  अशोक का सबसे छोटा स्तम्भ लेख रुम्मिदेइ तथा सबसे बड़ा भवरू लेख है।
- मण्डल कूपो का सर्वप्रथम प्रयोग मौर्य काल में हुआ।
- मौर्यकाल का महत्वपूर्ण बन्द्रगाह ताम्रलिपि था।
- पुरोहित, महामंत्री एवं सेनापति को करीब 48,000 पण वार्षिक वेतन के रूप में मिलते थे।
- अर्थशास्त्र में 28 अध्यक्षों का विवरण मिलता है जो विभिन्न विभागों में अध्यक्ष के रूप में मंत्रियों के नीचे काम करते थे। यूनानी लेखकों ने इन्हें मजिस्ट्रेट की संज्ञा दी थी।

  सूनाध्यक्ष – बूचड़ खाने का अध्यक्ष।

  अकराध्यक्ष – खानों का अध्यक्ष।

  पौतवाध्यक्ष – माप-तौल का अध्यक्ष।

  गणिकाध्यक्ष – वैश्याओं का निरीक्षक।

सीताध्यक्ष – कृषि विभाग का अध्यक्ष।

विविताध्यक्ष – चारागाह का अध्यक्ष।

कर :–

(1) **प्रणय** - आपातकालीन कर।

(2) **हिरण्य** - अनाज के रूप में लिया जानेवाला कर।

(3) **विष्टि** - निशुल्क श्रम एंव बेगार।

(4) **क्षेत्रक** - भूस्वामी को कहा जाता था।

(5) **उपवास** - काश्तकारो कहा जाता था।

मौर्यकालीन मुद्रा	**धातु**
कार्षापण/ पण/ धरण	– चांदी से बना
सुवर्ण	– सोने का
भाषक	– तांबे का सिक्का
काकणी	– तांबे से बना

- इन मुद्राओं को जारी करने का अधिकार लक्षणाध्यक्ष एवं सौवर्णिक का होता था।
- बलि एक प्रकार का धार्मिक कर था।
- भूमि कर में राजा के हिस्से को भाग कहा जाता था।
- जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के गवर्नर पुष्यगुप्त ने सौराष्ट्र प्रांत में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया।
- मेगास्थनीज ने भारतीय समाज का सात भागों में विभाजन किया था।
- कौटिल्य ने नौ प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।
- मौर्य काल में भूमि का उपज का 1/6 भाग या 1/4 भाग लिया जाता था।
- मौर्य काल में सिंचाई कर 1/5 से 1/3 भाग होता था। जो उदायभाग के रूप में लिया जाता था।

प्रमुख वस्तु	**प्रसिद्ध स्थान**
सूती वस्त्र	काशी, बंग, पुण्ड्र, कलिंग, मालवा
मलमल	बंग
रेशम	काशी एवं पुण्ड्र

- कौटिल्य के अनुसार **संयानपथ** समुद्री मार्गों का नाम था।
- मौर्य काल में पुनर्विवाह एवं नियोग प्रथा का प्रचलन था।
- मौर्यकाल में सती प्रथा का कोई प्रमाण नहीं मिलता।
- अर्थशास्त्र में दो प्रकार के न्यायालयों का वर्णन है:

(1) धर्मस्थीय न्यायालय - दिवानी अदालतें

(2) कण्टक शोधन न्यायालय - फौजदारी अदालतें

- अरत्नी वर्षा मापने का उपकरण था।
- अर्थशास्त्र में शुद्रों को आर्य कहा जाता है।
- रूपाजीवा वे स्त्रियां होती थी जो स्वतंत्र वैश्यावृत्ति को अपनाती थी।
- इस समय पश्चिमी तट पर स्थित बन्दरगाह सोपारा बहुत महत्वपूर्ण था।
- मयूर, पर्वत और अर्द्धचन्द्र की छाप वाली आहत मुद्राऐ मौर्य साम्राज्यकी मान्य मुद्राऐं थी।

कर	**भाग**
(1) महशूल	वस्तु के मूल्य का 1/5 भाग
(2) व्यापारिक कर	महशूल का 1/5 भाग

- पारिहारिक - वैसे गॉव जो कर से मुक्त थे।
- वार्ता - कृषि, पशुपालन और वाणिज्य व्यापार को संयुक्त रूप से कहते है।

मौर्य साम्राज्य के पांच प्रान्त–

मौर्य प्रांत	**राजधानी**
उत्तरापथ	तक्षशिला
अवन्ति राष्ट्र	उज्जैनी
कलिंग	तोसली
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
प्राशी	पाटलिपुत्र

- मेगास्थनीज ने भारतीय समाज का वर्गीकरण सात भागों में किया।
- सरकारी भूमि को सीता भूमि कहा जाता था।
- बिना वर्षा के अच्छी खेती होने वाली भूमि को अदेव-मातृक कहा गया।
- मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहद्रथ था जिसकी हत्या सेनापति पुण्यमित्र शुंग द्वारा की गई।